प्रा॰ डॉ॰ एम्॰ एस॰ हसमनोस
एम्॰ ए॰ पीएच॰डी॰
वि॰ ना॰ महाविदयालय, शिराला॰

प्र मा ण प त्र

:::::::::::::::

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती शोभा नाईक ने मेरे निर्देशन में यह शोध प्रबंध एम्॰फिल, उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

स्थळ : कोल्हापुर
दिनांक: २९:६:९३

निर्देशक
प्रा॰डॉ॰एम्॰एस्॰हसमनोस
वि॰ना॰महाविदयालय, शिराला

0000

चेहरे

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004.

शंकर शेष

प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध - प्रबंध का विषय डॉ॰ शंकर शेष के " चेहरे " नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन है। डॉ॰ शेष का यह एक प्रायोगिक और बहुचर्चित नाटक है। इस नाटक ने उसकी अनेक विशेषताओं के कारण मुझे आकर्षित किया। वैसे तो हिन्दी के अधिकांश नाटक केवल साहित्यिक गुणोंसे युक्त है। पर रंगमंच की दृष्टि से वे निराशाही करते है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में इन नाटकों को और रंगमंच की दृष्टि से जितना ध्यान देना आवश्यक था उतना नहीं दिया गया। पर स्वातंत्र्योत्तर काल में जिन इने - गिने नाटककारों ने इस कमी को पूर्ण करने का प्रयत्न किया उनमें डॉ॰ शेष का नाम महत्वपूर्ण रहा। उनके " पोस्टर ", " एक और द्रोणाचार्य ", " रक्तबीज ", " चेहरे " नाटक कथ्य, मूल्य और प्रयोग की दृष्टिसे कुछ विशेष मालुम पडते है।

रंगमंच की दृष्टिसे डॉ॰ शेष ने अनेक प्रयोग किये। वे प्रयोगधर्मी नाटककार थे। उनके " चेहरे " जैसे नाटकों ने हिन्दी रंगमंच को महत्वपूर्ण योगदान दिया। आकाशवाणी, दूरदर्शन, रंगमंच सभी के लिए डॉ॰ शेष ने नाटक लिखे। उनका " चेहरे " नाटक खासकर दूरदर्शन के लिए लिखा नाटक था। पर आगे वह रेडिओ पर भी हो चुका और रंगमंच पर भी उसका सफल प्रयोग हुआ। इस नाटक के कथ्य, शिल्प, प्रयोग सभी दृष्टि से मुझे वह विशेष लगा। डॉ॰ शेष जैसे प्रयोगशील नाटककार के प्रयोगशील नाटक का अनुशीलन करने का विचार मेरे मन में आया। इस नाटक का पूरा अध्ययन, करना मेरे इस प्रबंध का लक्ष्य रहा। " चेहरे " नाटक का अनुशीलन

करने का प्रयत्न मैने इस प्रबंध में किया है।

इस प्रबंध में डॉ॰ शेष जैसे अहिन्दी भाषी नाटककार के जीवन पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर मैने प्रकाश डाला है। नाटक के तत्वों को लेकर उसका विवेचन भी मैने किया है। नाटक में आयी समस्याओं का विवेचन मैने किया है तथा कथ्य, शिल्प, शैली, मंच आदि की प्रयोगशीलता पर मैंने अपने प्रबंध में गहराई में जाकर अध्ययन किया है।

विवेचन की सुविधा को ध्यान में लेकर मैने इस प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में डॉ॰ शेष की जीवनी, व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला है। वैसे तो उनकी जीवनी तथा कृतित्व अबतक अंधेरे में ही था। क्योंकि वे खुद प्रसिद्धि विन्मुखा - वृत्ति के थे। प्रकाश में आने के पहले ही उनका दुःखद देहांत हो गया था। उनके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उनके नाटकों में दिखायी देता है। उनके नाटक अनुभवों पर खड़े है इसलिए व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करना आवश्यक था।

दूसरे अध्याय में मैंने " चेहरे " नाटक का तात्त्विक विवेचन किया है। इस अध्याय में नाटक के तत्वों को लेकर नाटक का विवेचन किया है। साथ ही साथ नाटक की कथावस्तु, चरित्रचित्रण, भाषाशैली, देशकाल - वातावरण, उद्देश्य,

रंगमंच तथा शीर्षक की विस्तृत समीक्षा की है। इस नाटक में आदमी अभिनय करता है। चेहरे पर चेहरा चढ़ाए अपना असली रूप छिपाये रखता है। पर अध्यापिकाजी निर्भय होकर सबके चेहरे के नकाब उतारती है। सभी अचानक लाश के इर्द-गिर्द घटित होता है। इस नाटक का शीर्षक " चेहरे " है। समाज में आदमी चेहरे पर चेहरा चढ़ाए कैसा बर्ताव करता है यह बताया है।

तृतीय अध्याय में " चेहरे " नाटक में चित्रित सभी समस्याएँ अनुस्यूत हैं उनका विवेचन किया गया है। डॉ॰ शंकर शेष स्वातंत्र्योत्तर कालीन महत्वपूर्ण नाटककार रहे। स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद जो नये मूल्य और नयी समस्याएँ निर्माण हो गयी थी उन समस्याओं का यथार्थ दर्शन नाटकों में मिलता है। यहाँ मैंने सिर्फ " चेहरे " नाटक में आयी समस्याओं का विवेचन किया है। प्रेम और विवाह विषयक समस्या, वेश्या व्यवसाय करनेवाली औरतों की समस्या, सामाजिक समस्या, शोषक - शोषितों की समस्या, नीति विषयक समस्या, समाज-सुधार के पाखण्ड की समस्या, राजनीतिक समस्या, शिक्षा संस्था सम्बन्धी समस्या , आदि समस्याओं का विवेचन किया है। ये समस्याएँ स्वाभाविक रूप में नाटक में आ चुकी है। वर्तमान जीवन में उद्भूत ये समस्याएँ कथ्य का अंग बनकर आ गयी है।

चतुर्थ अध्याय में " चेहरे " नाटक की प्रायोगिकता का विवेचन किया है। डॉ॰ शंकर शेष की सबसे बड़ी विशेषता उनके प्रयोग में रही है। नाट्य लेखन में उन्होंने रंगमंच को अधिक महत्व दिया है। " चेहरे " नाटक विशेषत: टी॰वी॰ के लिए लिखा था। दूरदर्शन माध्यम की विशेषताएँ ध्यान में रखकर

" चेहरे " नाटक लिखा। डॉ॰ शेष ने इस नाटक में हर पात्र के चेहरे को दिखाकर उसके अंदर जो छिपे चेहरे हैं उनको सामने लाने का प्रयत्न किया है। चेहरे नाटक का पहला प्रयोग बंबई दूरदर्शन पर सितम्बर १९७९ में हुआ।

डॉ॰ शंकर शेष का " चेहरे " नाटक पुरानी परंपरा को छोडकर मरघट में घटना चक्र घटित होता है। एक लाश के इर्द-गिर्द मरघट में ये सभी पात्र बैठे है । यह प्रयोग हिन्दी में पहला ही होगा। हिन्दी में इसप्रकार का प्रयोग केवल शंकर शेष का ही दिखाई देता है। स्थल की दृष्टि से यह एक नया प्रयोग ही कहना चाहिए।

डॉ॰ शंकर शेष ने स्वातंत्र्योत्तर काल में उपेंद्रनाथ अश्क, लक्ष्मीनारायण लाल, जगदीशचंद्र माथुर, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, विष्णू प्रभाकर आदि अनेक नाटककारों के साथ कदम मिलाकर अनेक बहुमूल्य नाटक लिखे। " एक और द्रोणाचार्य " " फन्दी " " चेहरे ", " खजुराहो के शिल्पी ", " रक्तबीज " " कोमल गांधार " जैसे कलात्मक नाटक लिखकर अपना महत्वपूर्ण स्थान हिन्दी साहित्य जगत में साबित किया। हिन्दी मे अनेक मौलिक एवं प्रायोगिक नाटक लिखकर उन्होंने हिन्दी नाट्यसाहित्य को समृद्ध किया। सुगठित शिल्प, भाषा और नये शिल्प जैसी विशेषताओं को लेकर ये नाटक उपस्थित हुए है। रेडियो, दूरदर्शन , चित्रपट, रंगमंच सभी माध्यमों के लिए उन्होंने नाटक लिखे। अपने सभी नाटकों का मंचन होने का सौभाग्य उन्हें मिला।

उनके नाटकों को अनेक पुरस्कार मिले। राष्ट्रीय पुरस्कार से भी वे सम्मानित रहे। स्वातंत्र्योत्तर कालीन श्रेष्ठ नाटककारों में उन्होंने अपना योगदान दिया है।

इस प्रबंध के अन्त में उपसंहार तथा तीन परिशिष्ट दिये है।

डॉ॰ रोताकुमार, गिरीश रस्तोगी डॉ॰वीणा गौतम सुरेश गौतम, डॉ॰ प्रकाश जाधव, डॉ॰ सुनिलकुमार लवटे आदि आलोचकों के ग्रंथो से मेरा मार्ग प्रशस्त बना। इन आलोचकों के ग्रंथ तथा डॉ॰ शेष पर लिखे कई प्रबंध मेरे लिए सहाय्यक बने। " चेहरे " नाटक के लिए अत्यावश्यक सामुग्री जुटाना एक कठिण कर्म था क्योंकि इस नाटकपर पूरे विस्तार के साथ लिखने का मेरा पहला प्रयास रहा। उसके लिए मुझे हिन्दी विभागीय ग्रंथालय, पुणे विदयापीठ, खाडेकर ग्रंथालय, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर, कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, ग्रंथालय इस्लामपुर, वि॰ना॰ महाविद्यालय, ग्रंथालय शिराला, छत्रपती शिवाजी कॉलेज, ग्रंथालय सातारा, लालबहादूर शास्त्री कॉलेज, ग्रंथालय सातारा , गाडगे महाराज कॉलेज ग्रंथालय कराड आदि ग्रंथालयो से प्राप्त हुई। इन ग्रंथालयों के प्रमुखों का मै सदैव ऋणी हूँ।

प्रबंध लेखन में निर्देशक श्रध्देय गुरुवर्य डॉ॰ एम॰ एम॰ हसमनीस का बहुमूल्य मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनके मार्गदर्शन के बिना यह प्रबंध पूरा नहीं होता। उनको मैं कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष

डॉ· व्हो· के· मोरेजो का बहुमुल्य मार्गदर्शन मिला। डॉ· गजानन सूर्वे, डॉ· सुरेश गायकवाड तथा लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय के प्राचार्य प्र अभयसिंह राणे, डॉ· घाटे, डॉ· पो· एस· पाटोल, डॉ सुनिलकुमार लवटे आदि ने मुझे इस काम में बार - बार प्रोत्साहित करके बल दिया। उनके शुभाशोष भी इस काम को पूर्ति में महत्वपूर्ण रहे।

मेरी संस्था के अध्यक्ष श्री भागतसिंग नाईक, पदाधिकारी, प्राचार्य श्री शिवाजी कुंभार तथा मेरे सहयोगी प्राध्यापकों ने मेरी अनेक प्रकार से सहाय्यता की उनकी मैं ऋणी हूँ। मेरे अपने परिवार के लोगोंने भी बार - बार, प्रोत्साहन देकर इस काम को पूर्ण करने में मेरी सक्रीय सहाय्यता की इसलिए मैं उनकी ऋणी हूँ। मेरी जिगरी सहेली पाकिजा शेख ने मुझे बार बार प्रोत्साहन दिया और प्रबंध पूरा करने में सहाय्यता दी, उसकी भी मैं आभारी हूँ।

इस प्रबंध को पूरी लगन से टंकलिखित करने का काम श्रीयुत भारत चव्हाण सातारा ने किया उनकी भी मैं आभारी हूँ।

[प्रा· शोभा दिलीप नाईक]

0000

डॉ॰ शंकर शेष के " चेहरे " नाटक का अनुशीलन

- अनुक्रमणिका -

पहला अध्याय := डॉ॰ शंकर शेष : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१] व्यक्तित्व :- जन्म, शिक्षा, आदर्श, परिवार, विवाह मृत्यु॰

२] कृतित्व : नाटक :- मूर्तिकार, रत्नगर्भा, नयो सभ्यता के नये नमुने, तिल का ताड़, बिन बातो के दोप, बंधान अपने अपने, बाद का पानो, खाजुराहों का शिल्पो, फन्दो , एक और द्रोणाचार्य, कालजयो, घरौंदा, अरे ! मायावो सरोवर, रक्तबोज, पोस्टर, राक्षस, कोमल गांधार, आधो रात के बाद, त्रिकोण का चौथा कोण, निष्कर्ष ·

दूसरा अध्याय := " चेहरे " नाटक का तात्विक विवेचन :

१॰ कथानक २॰ कथोपकथन ३॰ चरित्रचित्रण : भारोसेजो, भवानजो, पंडितजो, अध्यापिकाजो, बेंदासिंह, विनोद-कमलो, खाम्बाटा-कुमार, परमानंद, सुखालाल, युवक तथा रमाकांत, ग्रामीण

४॰ देशकाल - वातावरण

५॰ भाषा

६॰ रंगमंच को दृष्टिसे उपयुक्त भाषा

७॰ शीर्षक

८॰ उद्देश्य

निष्कर्ष

अध्याय तीसरा :- " चेहरे " नाटक में चित्रित समस्याएँ :

: समस्या नाटक, प्रेम और विवाह विषयक समस्या, वेश्या-व्यवसाय , व्यवसाय करनेवाली औरतों की समस्या, चेहरे नाटक में सामाजिक समस्या; शोषक शोषितों की समस्या, नीति विषयक समस्या, धर्माधिकारियों, समाज - सुधारक के पाखण्ड की समस्या, राजनीतिक समस्या, आर्थिक समस्या, शिक्षा - संस्था सम्बन्धी समस्या·

अध्याय चौथा := " चेहरे " नाटक की प्रायोगिकता :

रंगमंच

हिन्दी रंगमंच का इतिहास :- भारतेंदू युग,
द्विवेदी युग,
प्रसाद युग

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक

डॉ· शेष का हिन्दी नाटकों में योगदान

" चेहरे " नाटक की प्रायोगिकता

" चेहरे " एक असंगत नाटक

उपसंहार :=

परिशिष्ट

१]· संदर्भ सूचि

२]· डॉ· शंकर शेष के नाटक

३]· डॉ· शेष के नाटकों को प्राप्त पुरस्कार·

ooo